Vol II Issue V Nov 2012

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidiciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 5, Nov. 2012
ISSN:-2231-5063
Available online at www.aygrt.net

ORIGINAL ARTICLE

तार सप्तक और मुक्तिबोध की कविताएँ

नीता सिंग

हिन्दी विभागाध्यक्ष
श्री बिंझाणी नगर महाविद्यालय , उमरेड रोड, नागपुर

सारांश :

मुक्तिबोध की कविताओं का प्रथम संकलन 'तार सप्तक' में हुआ हैं। कवि के रूप में उन्हें ख्याति 'तार सप्तक' के प्रकाशनोपरान्त ही प्रारंभ हुई। 'तार सप्तक' के संकलन काल की पृष्ठभूमि में छायावादी काव्य आंदोलन समाप्त हो चला था। प्रगतिवाद एक प्रभावशाली साहित्य–आंदोलन के रूप में महत्वपूर्ण होता जा रहा था। इसी के साथ–साथ छायावाद की एकान्तिक वैयक्तिकता की सूक्ष्म परिणति बच्चन और रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' की कविताओं में विकसित हो रही थी। इस समय के आसपास ही त्रिलाचे न शास्त्री का काव्य–सग्रंह 'धरती' प्रकाशित हुआ जिसमें उनकी प्रगतिशील कविताएँ संग्रहीत थी। त्रिलोचन शास्त्री के अलावा नागार्जुन, केदारनाथ, शमशेर बहादुर, भवानी प्रसाद मिश्र, शिवमंगल सिंह सुमन, नरेन्द्र शर्मा, प्रभृति कवि प्रगतिशील साहित्य की सर्जना में रत थे। सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' भी इन दिनों प्रगतिशील साहित्य की रचना कर रहे थे। उधर पंतजी ने सन् 1936 में 'युगान्त' की घोषणा करके 'रूपाभ' निकाला तथा वे 'युगवाणी' तथा 'ग्राम्या' की रचना कर चुके थे। 'तार सप्तक' इसी साहित्यिक परिवेश में संकलित

प्रस्तावना :

'तार सप्तक' में संग्रहीत अनेक कविताएँ, छायावाद और प्रगतिवाद, दोनों की विशेषताओं से युक्त हैं। लेकिन 'तार सप्तक' की पदावली, वाक्य रचना, आदि के प्रयोग में नविनता पाते हैं। 'तार सप्तक' छायावाद और प्रगतिवाद की विभिन्न विशेषताओं को लिए हुए ऐसा काव्य–संकलन हैं जिसमें छायावादोत्तर और प्रगतिवादोत्तर विशेषताएँ भी हैं। 'तार सप्तक' की भूमिका में अज्ञेय ने लिखा है कि इस संग्रह के सातों कवियों की रुचियाँ भिन्न हैं, व्यक्तित्व भिन्न हैं। यदि कोई समानता हैं तो यह कि ये 'राहों के अन्वेषी हैं।'[1] इससे स्पष्ट होता हैं कि 'तार सप्तक' में संकलित कवियों की भिन्नता संकलन के सम्पादक की दृष्टि से दूर नहीं थी तथा उन्हें इन कवियों की समानता नई राहों के अन्वेषण का ज्ञान भी था। इससे यह भी स्पष्ट होता हैं कि 'तार सप्तक' के कवि भाव या शैली के आधार पर स्थापित किसी एक काव्य–परम्परा या काव्य–आंदोलन के कवि नहीं है। वे अपने–अपने ढंग और सामर्थ्य से काव्य की नई भूमिका बना रहे थे। 'तार सप्तक' को प्रयोगवादी काव्यधारा का प्रवर्तक संकलन माना जाता है किन्तु प्रयोगवादी काव्यधारा की विशेषताओं का सम्यक् निर्देश सर्वमान्य रूप से अभी तक नहीं हो पाया है। इसीलिए कई आलोचकों ने काव्य – धारा के रूप में प्रयोगवाद के अस्तित्व पर संदेह प्रकट किया है क्योंकि प्रयोग किसी भी काव्य–धारा की विशेषता नहीं बन सकती। प्रत्येक काव्यधारा ही नहीं वरन् प्रत्येक युग का समर्थ कवि प्रयोग करता है।

व्यक्तिपरकता और समाज निरपेक्षता छायावादी काव्य में ही नहीं वरन् 'तार सप्तक' की कुछ कविताओं पर भी परिलक्षित होती हैं जो इतनी अधिक गहरा गई है कि उसकी अभिव्यक्ति के लिए उन्हें अपनी शैली का प्रयोग करना पड़ा है। इस व्यक्तिवादिता के प्रस्तुतीकरण के कई सामाजिक और ऐतिहासिक कारण हैं जिन्हें जानना महत्वपूर्ण हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध के भयानक और व्यापक नर–संहार ने समूची मानव जाति को अनिश्चितता के द्वार पर पहुँचाकर उसकी तुच्छता और नगण्यता को उसके सम्मुख प्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत कर दिया। फलस्वरूप व्यक्ति अपने मन की अन्तर्गुफाओं में धँसकर एकान्तिक साधना की ओर प्रवृत्त होने लगा। मुक्तिबोध ने 'तार सप्तक' के अपने वक्तव्य में उन प्रभावों और प्रेरणाओं की ओर स्पष्ट संकेत किया है जो उनकी संवेदना को रूप और दिशा देने में सहायक हुई हैं। 'तार सप्तक' में संग्रहीत मुक्तिबाधे की कविताओं के सवंदेनात्मक धरातल तथा उनकी काव्य–सवंदेना पर पड़े विभिन्न प्रभावों को देखने का प्रयास करेंगे।

मुक्तिबोध एक समय बर्गसाँ के प्रभाव में थे, यह बात उन्होनें 'तार सप्तक' के वक्तव्य में स्वयं स्वीकार की है– "सन् 1938 से 1942 तक के पाँच साल मानसिक संघर्ष और बर्गसोनीय व्यक्तिवाद के वर्ष थे। आंतरिक विनिष्ट शांति के और शारीरिक ध्वंस के इस समय में मेरा व्यक्तिवाद कवच की भाँति काम करता था। बर्गसाँ की स्वतंत्र क्रियमाण 'जीवन शक्ति' (Elan Vital) *के प्रति मेरी आस्था बढ़ गई थी। परिणामतः काव्य और कहानी नए रूप प्राप्त करते हुए भी अपने ही आसपास घूमते थे, उनकी गति ऊर्ध्वमुखी न थी।"[2] शुजालपुर मंडी के शारदा शिक्षा–सदन के प्रधानाध्यापक डॉ. नारायण विष्णु जोशी 'बर्गसाँ के अध्येता' थे। संभवतः उन्हीं के संपर्क से मुक्तिबोध इस दार्शनिक के सिद्धांतों से परिचित हुए और पांच वर्षो तक उसके असर में रहे। डॉ. जोशी की रुचि बर्गसाँ में ही नहीं, दूसरे भाववादी दार्शनिकों में भी थी। मुक्तिबोध अमरीकी भाववादी दार्शनिक इमर्सन से भी उन्हीं के माध्यम से परिचित हुए होगें। बर्गसाँ और इमर्सन इन दोनों का असर मुक्तिबोध की 'तार सप्तक' में संकलित कविताओं में दिखलाई पड़ता हैं। वैसे उसमें ऐसी कुछ और कविताएँ भी हैं, जिनमे भाववाद से हटकर मार्क्सवाद की तरफ आने के संकेत हैं। भाववादी दर्शन में व्यक्ति और उसकी आत्मा को अत्यधिक महत्व प्राप्त है।*

गजानन माधव मुक्तिबोध की कविताएँ :–

'आत्मा के मित्र मेरे' – शीर्षक कविता में मुक्तिबोध का मित्र 'आत्मशाली पुरुष' है। वे कहते हैं – "वह मित्र का मुख ज्यों अतल आत्मा हमारी बन गयी साक्षात् निज सुख।
वह मधुरतम ऱ्हास
जैसे आत्म–परिचय सामने ही आ रहा है मूर्त हो कर।
. . . अपनी व्यक्तिमत्ता के सहारे जो चले हैं प्राण,
उनको कौन देता है
अचल विश्वास का वरदान !
उनको कौन देता है प्रखर आलोक।"3

'दूर तारा' – कविता में 'तारक' के प्रतीक को विकसित किया हैं, जिसमें उन्होंने कहा
हैं – "और जाने क्यों,
मुझे लगता कि ऐसा ही अकेला नील तारा,
तीव्र–गति,
जो शून्य में निस्संग,
जिसका पथ विराट्–
वह छिपा प्रत्येक डर में,
प्रति ह्रदय के कलषों के बाद
जैसे बादलों के बाद भी है शून्य नीलाकाश।"4

कविता के अंत में वे कहते है कि "इसलिए प्रत्येक मनु के पुत्र पर विश्वास करना चाहता हूँ।" यह कोई वैज्ञानिक मानववाद न होकर घोर अवैज्ञानिक बर्गसा का जीवनवाद है, जो उन्हें जीवन–विज्ञान के क्षेत्र में प्रचलित एक सिद्धांत से प्राप्त हुआ था। उस सिध्दांत के अनुसार जीवन किसी यांत्रिक भौतिक प्रक्रियाँ की देन न होकर उन विशिष्ट अभौतिक तत्वों की देन है जो प्रत्येक सजीव वस्तु मे ं निहित हाते ँ ह ै। जीवन निरतं र गतिशील एव ं क्रियाशील चलने वाली प्रक्रियाँ हैं। मुक्तिबाधे स्वयं कहते हैं कि – "यहाँ मैनें 'जीवन' का अर्थ उसके व्यक्तिगत और सामाजिक या राजनैतिक अर्थ से ऊपर उस असीम सृजनशील सत्ता से लिया है, जो भिन्न–भिन्न रुपों में प्रकट है, और एक रूप को छोड़ दूसरे को ग्रहण करना, उसका स्वभाव है। क्योंकि वह गतिमय है, अतएव राजनैतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत आदि उसी की सृजन धाराएँ हैं।"5

यही बर्गसाँ का मसंद टपजंस अथवा 'जीवन–संवेग' है, जो मनुष्य में विकास की सर्वोच्च अवस्था प्राप्त करता है, उसकी स्वंतत्रता, रूढी–मुक्तता और वैचारिक खतरे उठाने की बहादुरी में।

'खोल आँखें' – कविता में देश के प्रति प्रेम एवं उसकी स्पन्दनशील स्थिति को देखने का आव्हान कवि करता हैं। इस कविता में मुक्तिबोध अपनी आत्मा को उसी ईश्वर के देश में आँखे खोलने के लिए कहते हैं –

"जिस देश प्राणों की जलन में
एक नूतन स्वप्न का संचार हो,
ओ ह्रदय मेरे, उस ज्वलन की भूमि में बिछ जा स्वयं ही;
औ तड़प कर उसे निराले देश में तू खोल आँखें।"6

'अशक्त' – कविता में कवि ने बाह्य ज्ञान को कोई महत्व न देते हुए केवल 'अंदर को
मजबूत करने पर बल दिया हैं –
"जबकि शंकाकुल तृषित मन खोजता
बाहरी मरू में अमल जल–स्त्रोत हैं,
क्यों न विद्रोही बनें ये प्राण जो
सतत् अन्वेषी सदा प्रद्योत हैं ?"7

'मेरे अंतर' – शीर्षक कविता में बर्गसाँ के जीवन–संवेग को लेकर लिखी गई कविता हैं –

"वह सहज उठा ले चला सुदृढ़ तपते जीवन का महा ज्वार,
उसके द्रुत–गति–प्रति पदक्षेप से झंकृत हो उठ रहा गान,
जो नव्य तेज का भव्य भान।"8

यह जीवन–संवेग मनुष्य के अंदर से उत्पन्न होता है; किसी भौतिक क्रिया अथवा किसी ईश्वर से नहीं। बर्गसाँ ने जीवन को ही ईश्वर मानते हुए कहा था कि यह उसकी तरह बना–बनाया माल नहीं। यह जीवन अनवरत चलने वाली स्वतंत्र क्रिया हैं।

'मृत्यु और कवि' – कविता म ें जीवन–सव े ग का सिद्धातं मृत्यु का निषधे करता है, बल्कि मृत्यु को जीतने की बात कहता हैं –

"इस क्षण–भर के दुःख भार से, रहो अविचलित, रहो अचंचल।
अन्तर्दीक के प्रकाश में विनत–प्रणत आत्मस्थ रहो तुम,

DSpace™

जीवन के इस गहन अतल के लिए मृत्यु का अर्थ को तुम।"9
'नूतन अहं' – कविता में कवि ने आत्मभर्त्सना का स्वर उभारा हैं –
"तेरी इस दयनीय दशा का लघुतामय संसार
अहंभाव उत्तुंग हुआ है तेरे मन में
जैसे घूरे पर उड्डा है
धृष्ट कुकुरमुत्ता उन्मत्त।"10

'विहार' – कविता में 'अंतर्मनुष्य' की रिक्तता, दीनता और यांत्रिकता पर अपना क्षोभ व्यक्त किया हैं –

"दिन के बुखार
रात्रि की मृत्यु
के बाद हृदय पुंसत्वहीन,
अन्तर्मनुष्य
रिक्त–सा गेह
दो लालटेन–से नयन दीन;
निष्प्रान स्तम्भ
दो खड़े पाँव
लकड़ी का खोखा वक्ष रिक्त;
मस्तिष्क तेल
की है मशीन
संसार–क्षेत्र है तैल–सिक्त।"11

'पूँजीवादी समाज के प्रति' – कविता में मुक्तिबोध ने स्पष्ट लिखा हैं कि मार्क्सवादी प्रगतिवादिता के अनुरूप ही उनकी आस्था पूँजीवादी समाज में नहीं हैं क्योंकि यह समाज पूर्णतः असत्य और अन्याय पर आधारित है। कवि इस वर्ग की रेशमी संस्कृति पर क्रोध करता है, उसे देखकर उसे घृणा आती हैं –

"तेरी रेशमी वह शब्द–संस्कृति अन्ध
देती क्रोध मुझको, खून जलता क्रोध
तेरे रक्त में भी सत्य का अवरोध
तेरे रक्त से भी घृणा आती तीव्र
तुझको देख मितली उमड़ आती शीघ्र।"12

'नाश–देवता' – शीर्षक कविता में कवि 'नाश–देवता' को वामन रूप में बुलाकर स्वयं राजा बलि बनकर अपना सर्वस्व दे देना चाहता है क्योंकि उसे लगता है कि 'नाश–देवता' के "तीक्ष्ण वाणों की नोकों पर जीवन संचार करेगा तथा सभी उर के अंधकार में एक तड़ित वेदना उठेगी और तभी सृजन की बीज वृध्दि हित जड़ावरण की मही फटेगी।"13 कवि 'नाश–देवता' का आव्हान करता हैं –

"हे रहस्यमय, ध्वंस–महाप्रभु, जो जीवन के तेज सनातन,
तेरे अग्निकणों से जीवन, तीक्ष्ण बाण से नूतन सर्जन।
हम घुटने पर, नाश देवता ! बैठ तुझे करते हैं वन्दन,
मेरे सिर पर एक पैर रख नाप तीन जग तू असीम बन।"14

'सृजन क्षण' – शीर्षक कविता में कवि जनता के बारे में कहते हैं –

"जबकि स्वयं मैं सुज्ञ बना हूँ
अज्ञों का अन्तर पा कर ही,
सदा रहूँ उन का चाकर ही
वे कि जिन्होंने आत्मरक्त से मुझ को सींचा
कैसे हँस सकता हूँ मैं उनपर ही।"15

समष्टिगत जीवन के प्रति लगाव होने के कारण कवि की काव्य–सवेदना मे दो प्रकार की प्रतिक्रियाएँ परिलक्षित होती हैं। एक तो यह की अभिजात्य वर्ग या पूँजीवादी समाज की स्वार्थलिप्सा के कारण उनके मन में उसके प्रति घृणाभर गई है और दूसरी ओर जगत् के विषम व्यापारों व अपने कड़े जीवन संघर्ष व विद्रोह की असफलता के कारण उनमें एकाकीपन की भी प्रवृत्ति आ गई है।

'अंतर्दर्शन' – कविता में कवि लिखता हैं कि–

"मैं अपने में ही जब खोया तो अपने से ही कुछ पाया।
निज का उदासीन विश्लेषण आँखों में आँसू भर लाया।
मेरा जग से द्रोह हुआ पर मैं अपने से ही विद्रोही।
गहरे असंतोष की ज्वाला सुलग जलाती है मुझ को ही।।"16

'आत्म–संवाद' – शीर्षक कविता में मुक्तिबोध ने अपने अकेलेपन के भाव की वस्तुस्थिति को प्रकट किया है। वे अपनी प्रतिकूल परिस्थितियों से निरतंर सघंर्ष कर रहे थे – मनःशक्ति के साथ ही साथ उनकी शारीरिक शक्ति भी क्षीण होती जा रही थी –

"प्राण की है बुरी हालत
और जर्जर देह; यह है खरी हालत।
उग्र–द्रष्टा में स्वयं हूँ जब कि दुनिया मार्ग–भ्रष्टा।"17

'व्यक्तित्व और खंडहर' – शीर्षक कविता भी बर्गसाँ के दर्शन के प्रभाव में ही रची गई है। कविता के नीचे कवि ने जो टिप्पणी दी है, उसका यह वाक्य ध्यातव्य है– "व्यक्तित्व किन्हीं भी कारणें से विकेन्द्रित हो, परन्तु उसके लिए पुकार अवचते न से, जो कि जीवन–शक्ति का रूप है, निकट संबंध रखती है। वह समग्रता की ओर, मनस्संगठन की ओर का प्रयत्न केवल बुद्धिगत ही नहीं, शुद्ध जीवनगत है।"18 कविता की ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं –

"दब चुकी जो मर चुकी है आत्मा,
खत्म जो हो ही गयी आकांक्षा,
व्यक्ति में व्यक्तित्व के खंडहर।"19

'मैं उनका ही होता' – कविता में कवि 'उनका ही' इसलिए होना चाहता है क्योंकि उनसे उसे 'भाव' मिलते हैं जिन्हें वह अपने शब्दों में व्यक्त कर देता है आरै इस शब्द–साधना के कारण कवि ऊँचा उठता चला जाता है –

"मैं उनका ही होता, जिनसे मैंने रूप–भाव पाये हैं।
वे मेरे ही लिये बंधे हैं जो मर्यादाएँ लाये हैं।
मेरे शब्द, भाव उनके हैं,
. . . मैं ऊँचा होता चलता हूँ
उनके ओछेपन से गिर–गिर;
उनके छिछलेपन से खुद–खुद,
मैं गहरा होता चलता हूँ।"20

'हे महान !' – कविता मे ं कवि ने जनता को सबोधित किया है ं जिसम े उन्हाने े उनसे कहा कि – "हे महान् ! तव विस्तृत उर से

दृढ़ परिरम्भण की क्षमता दो,
तव स्नेहोष्ण हृदय का स्पन्दन
सुन पाने की आकुलता दो।
जिससे विवश रहस्य खोल दे
सत्य कि विद्युत् विह्वलता दो !"21

भावुकता का यह दौर कुछ दिन और चलता है, लेकिन धीरे–धीरे चीजे आकार लेने लगती हैं और मुक्तिबोध का काव्य मार्क्सवाद के आधार पर अपने को यथार्थवाद की बुलंदियों को छूने लगता है।

पुनश्च – में कवि मुक्तिबोध कहते है कि – "मेरा अपना प्रदीर्घ अनुभव बताता है कि व्यक्ति स्वातंत्र्य की वास्तविक स्थिति केवल उनके लिए है जो उस स्वातंत्र्य का प्रयोग करने के लिए सुपुष्ट आर्थिक अधिकार रखते हैं, जिससे कि वे परिवार सहित मानवोचित जीवन व्यतीत कर सकें और साथ ही व्यक्ति स्वातंत्र्य का ऐसा प्रयोग भी कर सकें जो विवेकपूर्ण हो।"22

"एक आत्म वक्तव्य" – 'तार सप्तक' के द्वितीय संस्करण में उनकी एक अन्य कविता भी प्रकाशित की गई है, जिसका रचनाकाल सन् 1963 है। इस कविता का शीर्षक "एक आत्म वक्तव्य" है। कविता की आरम्भिक पंक्तियों में फैटेंसीपरक वातावरण की योजना करते हुए उन्होंने अपने अतंमर्न में निरतंर चलने वाले क्रियाशील द्वद्वं को उस प्रकार चित्रित किया है –

" . . . और, जब
मेरा सिर दुखने लगता है,
धुँधले–धुँधले अकेले में आलोचना शील
अपने में से उठे धुएँ की ही चक्करदार
सीढ़ियों पर चढ़ने लगता हूँ।"23

कहने का तात्पर्य यह है कि कवि के व्यक्तित्व निर्माण की दिशा में लगातार काट छाँट चलती रही है। कवि के संपूर्ण व्यक्तित्व की अपूर्ण मूर्ति को पूर्ण करने की क्रिया चलती ही रहती है –

मेरी काट–छाँट, छील–छाल अनिवार।
ऐसी उन भयानक क्रियाओं में रम
कटे–पिटे चेहरों के दागदार हम
बनाते हैं अपना कोई अलग दिक्–काल।"24

निष्कर्ष :–

DSpace™

मुक्तिबोध को नयी पीढ़ी के कवियों में सर्वाधिक सम्मान दिये जाने का कारण यह है कि उन्होंने जटिल संवेदनाओं की सर्जनात्मक सृष्टि करने के लिए शब्दार्थ के जंगलों में भटकने का सबसे अधिक जोखिम उठाया हैं। इसीलिए संक्रांति के बिन्दु पर खड़े मानव का अंतर्द्वन्द्वउनकी कविताओं में पूर्णतः उभर उठा है। उनकी फेन्टेसियाँ काव्य जगत की अनमोल धरोहर हैं। इसलिए मुक्तिबोध लम्बे समय तक जनवादी और लोक कवि के रूप में जाने जाते रहेगें।

संदर्भ सूची :–

1) 'तार सप्तक' – भूमिका – अज्ञेय – पृ. क्र. 12
2) 'तार सप्तक' – मुक्तिबोध – वक्तव्य – पृ. क्र. 22
3) 'तार सप्तक' – मुक्तिबोध – 'आत्मा के मित्र मेरे' – पृ. क्र. 24, 26
4) 'तार सप्तक' – मुक्तिबोध – 'दूर तारा' – पृ. क्र. 27
5) कर्मवरी 4 मई 1940 में प्रकाशित अपने अंक में –
'आधुनिक हिंदी साहित्य और नवयुग की समस्याएँ'
6) 'तार सप्तक' – मुक्तिबोध – 'खोल आँखें – पृ. क्र. 28
7) 'तार सप्तक' – मुक्तिबोध – 'अशक्त' – पृ. क्र. 30
8) 'तार सप्तक' – मुक्तिबोध – 'मेरे अंतर' – पृ. क्र. 31
9) 'तार सप्तक' – मुक्तिबोध – 'मृत्यु और कवि' – पृ. क्र. 32
10) 'तार सप्तक' – मुक्तिबोध – 'नूतन अहं' – पृ. क्र. 33
11) 'तार सप्तक' – मुक्तिबोध – 'विहार' – पृ. क्र. 34
12) 'तार सप्तक' – मुक्तिबोध – 'पूँजीवादी समाज के प्रति' – पृ. क्र. 35
13) 'तार सप्तक' – मुक्तिबोध – 'नाश देवता' – पृ. क्र. 36
14) 'तार सप्तक' – मुक्तिबोध – 'नाश देवता' – पृ. क्र. 36
15) 'तार सप्तक' – मुक्तिबोध – 'सृजन–क्षण' – पृ. क्र. 36–37
16) 'तार सप्तक' – मुक्तिबोध – 'अन्तर्दर्शन' – पृ. क्र. 39
17) 'तार सप्तक' – मुक्तिबोध – 'आत्मा–संवाद' – पृ. क्र. 41
18) 'तार सप्तक' – मुक्तिबोध – 'व्यक्तित्व और खंडहर' – पृ. क्र. 41
19) 'तार सप्तक' – मुक्तिबोध – 'व्यक्तित्व और खंडहर' – पृ. क्र. 42
20) 'तार सप्तक' – मुक्तिबोध – 'मैं उनका ही होता' – पृ. क्र. 43
21) 'तार सप्तक' – मुक्तिबोध – 'हे महान !' – पृ. क्र. 43
22) 'तार सप्तक' – मुक्तिबोध – पुनश्च – पृ. क्र. 44
23) 'तार सप्तक' – मुक्तिबोध – 'एक आत्मवक्तव्य' – पृ. क्र. 45
24) 'तार सप्तक' – मुक्तिबोध – 'एक आत्मवक्तव्य' – पृ. क्र. 50

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net